International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 18-19

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 18-19
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 03-09-2020
Accepted: 19-10-2020

Dr. Poonam Kumari
Assistant Professor,
Department of Sanskrit,
LP Shahi College, Muzaffarpur,
Bihar, India

Corresponding Author:
Dr. Poonam Kumari
Assistant Professor,
Department of Sanskrit,
LP Shahi College, Muzaffarpur,
Bihar, India

भारतीय संस्कृति और पुराण

Dr. Poonam Kumari

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विविधताओ से परिपूर्ण है। सम्पूर्ण संसार को संस्कृति भारतीय की देन कही जा सकती है। इस संस्कृति को सर्वोच्च बनाने में संस्कृत भाशा का स्थान सर्वोपरि है। संस्कृत भाशा को देवभाशा तथा सुर भारतीय के नाम से भी हम जानते है। संस्कृत संसार की समस्त प्राचीनतम भाशाओ में है। इस विशय में विद्धानों का कोई मतभेद नहीं है। भाशा विज्ञान की दृश्टि मे संसार की भाशाओ में दो ही भाशाए है। जिनके बोलने वालो ने संस्कृति तथा सभ्यताओ का निर्माण किया है, जिसमें एक आर्यभाशा है एवं दूसरी सेमेंन्तिक भाशा है आर्यभाशाओ में संस्कृत सबसे प्राचीनतम है। आजकल भारत की समस्त प्रन्तीय भाशाएँ संस्कृत भाशा से ही निकलती है संस्कृत षब्द सम् उपसर्ग तथा कृ धातु से बना है जिसका मौलिक अर्थ है संस्कार की गई भाशा। संस्कृत भाशा के दो रूप हमारे समने प्रस्तुत है वैदिक तथा लौकिक । वैदिक भाशा या वेदभाशा में संहिता तथा ब्राहमणों की रचना हुई है तथा लौकिकी या लोकभाशा में रामायण महाभारत आदि।

वैदिक साहित्य में वेदों का स्थान सर्वोपरि है विष्व के उपलब्ध प्राचीन ग्रंथो में वेद सबसे प्राचीनतम है, इसे सबो ने स्वीकार किया है संहिता ब्राह्मण आरण्यक उपनिशद आदि वेद के चार भाग कहलाते है। वेद हमारे सनातन धर्म के सर्वप्रामाणिक तथा प्राचीन ग्रंथ है। वेद का पूरक या उपब्रंहण करने वाला ग्रंथ पुराण कहलाता है। पुराण षब्द की व्युत्पतियों में पुराणात् पुराणम् भी अन्यतम व्युत्पति है, जिसका तात्पर्य यह है कि वेदार्थ के पुराण करने के कारण ही इस ग्रंथ का पुराण नामकरण प्राप्त हुआ। जीवगोस्वामी जी ने पुराण को वेद के सदृष अपौरूशेय माना है उनका तर्क है कि पूर्ति करने वाला पदार्थ भी मूल पदार्थ से सर्वथा सादृष्य धारण करता है । महाभारत के आदि पर्व मे व्यास जी ने स्वयं कहा है ।

इतिहास पुराणाभ्याम वेदं समुपबृंहेत्।
विभेत्यल्पश्रुताद् वेदों मामयं प्रहरिश्यति।।

वेद की भाशा प्राचीन और दुरूह है। इसके विपरीत पुराण भाशा व्यावहारिक तथा सरल, और षैली रोचक एवं आख्यानमयी है इसलिए जनता के हृदय तक धर्म के तत्व को सुबोध भाशा के द्वारा पहुँचा देने में पुराण अद्वितीय साहित्य है। स्मृतियॉ भी वेद प्रतिपादित धर्म का वर्णन करती है परन्तु वे उपेदषमयी होने के कारण आकर्शण विहीन हो जाती है, परन्तु पुराण अपने उपेदषों को कथा–कहानी आख्यान उपख्यान के रूप में प्रस्तुत कर आकर्शक एवं सर्वातिषायी बनाती है। जनता के हृदय को जितना आकृश्ट पुराण करता है उतना न तो वेद और न स्मृति कर पाती है। इसलिए नारदीय पुराण में कहा गया है

वेदार्थादधिकं मन्ये पुराणार्थं वरानने।
वदेः प्रतिश्ठिताः सर्वं पुराणे नात्र संषय।।

अर्थात वेद सबो के द्वारा प्रतिश्ठित है परन्तु विद्वानों ने पुराण को ही सर्वश्रेश्ठ माना है, इसमें कोई संषय नही है।

पुराणों की संख्या के विशय में विशय में कोइ मदभेद नहीं है। इसकी संख्या 18 है, जैसा कि बताया गया है।

मदृय भदृयं चैव व्रत्रय वचतुश्टयम्।
अनापलिडगकुस्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।

अर्थात दो मकरादि पुराण– मत्स्य एवं मार्काण्डेय, दो भकारादि पुराण पुराण भविश्य एवं भावगत, तीन व्रयुक्त पुराण – ब्रहााण्ड ब्रहावैवर्त एवं ब्रहा, चार वकारादीपुराण –वमान, वराह, विश्णु एवं वायु तथा अग्नि, नारद, पद्य, लिंग, गरूड़ कर्म, एवं स्कन्द आदि। इन पुराणों में भिन्न– भिन्न देवताओं की उपासना एवं महता का प्रतिपादन किया गया है। पद्यपुराण में इन पुराणों का सत्व, रज, तम इन तीन गुणों के अनुसार विभक्त किया गया है। विश्णुविशयक पुराण सात्विक माने गये हैं, ब्रहाविशय

राजस तथा षिव– विशयक तामस।
पुराण के पॉच लक्षण बताये गए हैं
सर्गष्च प्रतिसर्गष्च वंषों मन्वन्तराणि च।
वंषानुचरतिं चैव पुराणं पंच लक्षणम्।।

मानव समाज का इतिहास तभी सम्पूर्ण समझाा जाता है जब उसकी कहानी सृश्टि के आंरम्भ से लेकर वर्तमान का तक क्रमबद्ध रूप से दी जाए। पुराण का आंरभ सृश्टि से तथा अन्त प्रलयं से होता है। दोनों छोरो के बीच में होने वाले विषाल कालखण्डो का, राजवंषों का तथा गौरवषाली राजाओ का विवरण देना ही पुराण का पुराणत्व है। राजा परीक्षित से लेकर राजा पद्मनन्द तक का इतिहास पुराण के आधार पर ही ज्ञान होता है। सम्राट भरत के द्वारा षासित होने के कारण इस देष का नाम भारत पड़ा। इससे पहले इसका नाम अजनाभ था जिसका षाब्दिक अर्थ है अज ब्रहा की नाभि से नाम उत्पन्न होन वाला। यह नाम आर्यो के मूल निवास को भारतवर्श में प्रतिश्ठित होने का स्पश्ट संकेत करता है। पुराण विषालकाय प्रसादों तथा महलों के निर्माण करने वाले पातावलासी मय नामक असुर के संकेतों से भर पड़ा है वास्तव में यह भय नाम असुर के संकतों से भरा पडा हैं। वास्तव में यह मय कोई काल्पनिक व्यक्ति न होकर जीते जागते प्राणी थे, जो षिल्पकला के महनीय प्रतिश्ठापक माने जाते हैं।

प्राचीन भारत का ज्ञान–विज्ञान पषु–पक्षी विज्ञान, वनस्पति आयुर्वेद सब को एकत्र कर पुराणों में भर दिया गया है। अतः पुराण विष्वविद्या का कोश है। जिस प्रकार इनसाइक्लोपीडिया (विष्वकोश वर्तमान में लिखने का प्रचलन है, उसी प्रकार अग्नि, नारद, गरूड, पुराणो की रचना ज्ञान विज्ञान को लोकप्रिय बनाने की दृश्टि से की गई है। यहॉ व्याकरण, छन्द ज्योतिश तथा धर्मषास्त्र आदि विशयों का वर्णन बडी सुगमता के साथ की गई ह। अतः पुराण जनता का ग्रन्थ है, विद्वानो का नही।

पुरणों मे ज्ञान को सुगमता से प्रस्तुत किया गया है।

अवतारवाद पुराणो का एक परिहित तत्व है। ऋतम का उदय सृश्टि के आरंभ में हुआ है। ऋत उस सार्वभौम सार्वकालिक नियम का अभिधान है जिसके द्वारा यह विष्व नियत रूप से परिचलित होता है सूर्य–चन्द्र ग्रह, नक्षत्रादि अपनी अपनी कक्षा में नियत रूप से तथा निष्चित काल के लिए घूमते रहते हैं प्रकृति इन नियमो का पालन करती है। प्रजा को धारण करने वाला धर्म इसी ऋतु का अभिव्यक्त प्रांजल स्वरूप है। इस घर्म में जब ग्लानि होती है का पक्ष प्रवल होकर जब न्याय के पक्ष को दबाने लगता है, विष्व संतुलन में जब क्षोभ उत्पन्न हो जाता है, तब इसे ठीक करने के लिए विष्वश्रृख्ला को नियमित करने के लिए सर्वषक्तिमान को स्वयं नाना रूप में यहॉ आना पड़ता है। इसे अवतार कहते कहते है। पुराणों में इसी अवतार का सांगोपांग विवचन है। श्रीमद्भागवत का कथन है कि जिस प्रकार न सूखनेवाले तालाब से हजारेा क्षुद्र नदियॉ निकलती हैं, उसी प्रकार सत्य के भण्डार भगवान् से असंख्य अवतार निकलते है

अवतारा हससंख्येया गुणासत्वनिधेर्द्विजाः।
यथाडविदासिनः कुल्याः सरसः स्यु सहस्त्रषः।।

तथापि अवतारों की संख्या 24 मानी गई है। पुनः संक्षिप्त में 10 अवतार बातये गए है। ।इन अवतारों में भी राम और कृश्ण के लोकोतर षौर्य एवं सौन्दर्य के प्रति पुराणों की महती श्रद्धा है। अतः पुराण भक्ति का प्रचारक ग्रंथ है।

पुराण में पंचदेवों की उपसना पर आग्रह है ब्रहा विश्णु षिव गणेष तथा सूर्य ये समस्त वैदिक देवता ही हैं। सूर्य की उपासना तो वैदिक है। प्रत्येक द्विज सूर्य की उपासना गायत्री जप द्वारा ही करता है। आज का हिन्दु धर्म पुराणो की ही देन है। आज की संस्कृति का रूप पुराण के चिन्तन और अनुषीलन के बिना यथार्थतः समझ में नही आ सकता।

अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय धर्म तथा संस्कृति के स्वरूप को यथार्थतः जानने हेतु पुराण का अनुषीलन नितान्त अपेक्षित है। धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक तथा भौगोलिक आदि अनेक दृश्टियों से पुराण का विषिश्ट महत्व है। वेद हमसे बहुत दूर हट गये है भाशा की दृश्टि से परन्तु पुराण हमारे समीप है इन पुराणो को रचयिता महर्शि वेद–व्यास हमरे परम आराध्य है यह सौभाग्य का विशय है कि हमलोग आज भी गुरूपूर्णिमा आशाढी पूर्णिमा के अवसर पर व्यास की पूजा अर्चना कर उनके विषाल . ऋण से उऋण की यथासंभव चेश्टा करते हैं। भागवत में कहा गया है

कथा इमास्ते कथिता मंियसां विताय लोकेशु यषः परेयशाम्।
विज्ञान –वैराग्य विवक्ष्या विमो वचोविभूर्तीन तु पारमार्थ्यम्।।

अर्थात पुराण का वर्णन पृथ्वी के लोगो के कल्याणार्थ किया गया है इसमें विज्ञान तथा वैराग्य का सुन्दर समावेष के साथ विभिन्न राजाओं का यषोगाान किया गया है जिससे उनका अनुकरण एवं आचरण लोगों के द्वारा किया जाए।

पष्चिमी षिक्षा के दूशित वातावरण में पुराण के स्वरूप को समझना कठिन है इस के कारण पुराणो के वैज्ञानिक संस्करण एवं गंभीर अर्थ–चिन्तन का अभाव है पुराणों के प्रति लोगों में रूझान अब क्रमषः बढ रहे हैं फिर भी आजकल के विद्धान पुराणों के रहस्य को न समझ कर उसे स्वार्थ निर्मूल निराधार तथा अप्रमाणित बतलाने की धृश्ट चेश्टा करते है पुराणो का महत्व न केवल धार्मिक है। बल्कि यह इतिहासिक दृश्टि से अति महत्पूर्ण है। पुराण की दृश्टि ही भारतवर्श की मनीशियो के विचार से सत्य इतिहास की कोषिका है। कौटिल्य के अर्थषास्त्र में भी पुराणे को उपदेष देकर सन्मार्ग पर चलने की राह बतायी गयी है। महाभारत के यह वर्तमान रूप प्राप्त होने से पहले ही पुराणो का अस्तित्व था । महाभारत कथा के वक्ता अग्रश्रवा के पुत्र लोम्हर्शण थे। जो पुराणो के विषेश ज्ञाता थे। अतः हमारी संस्कृति पुराणो से गौरवान्वित है ।

वर्तमान भागवत पुराण लोगो के जनमानस पर अपना अमीट छाप छोड़ता है। भागवत भक्तो एवं विद्धानों प्रमियों के द्धारा यत्र तत्र भागवतपुराण तथा कथाएॅ प्रसारित किये जाते है। गरूड़ पुराण को मोक्षदायक माना जाता है। विश्णु पुराण भगवान श्री हरि के विभिन्न अवतारो की विवेचना करता है। इस प्रकार वर्तमान समय में भागवतपुराण विश्णुपुराण, गरूड़पुराण, हमारे हिन्दु धर्म का आधारषिला बनकर जन जन तक पहुचॅ कर अपना सर्वोच्च स्थान धारण करता है। इसकी गरिमा दिनोदिन बढती जा रही है अतः यह कहना अतिषयोक्ति नही होगा की भारतीय संस्कृति एवं भारतीय धर्म पुराणो का अवलोकन अग्रसर हो रही है एवं इन दोनो में अभिन्न संबध है।

सन्दर्भ

1. महाभारत (आदि पर्व)
2. श्रीमद्भागवत्
3. नारदीय पुराण
4. विश्णु पुराण
5. गरूड़ पुराण
6. गीता
7. कौटिल्य का अर्थषास्त्र
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास
9. संस्कृत षास्त्र मंजूशा (डा0 उदयषंकर झाा)